इकाई 8 रघुवंशम् (प्रथम सर्ग) श्लोक 11-25

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 काव्यांश की व्याख्या

- 8.2.1 मनु का परिचय
- 8.2.2 दिलीप का जन्म
- 8.2.3 दिलीप का स्वरूप
- 8.2.4 दिलीप के गुण
- 8.2.5 दिलीप की कर-व्यवस्था
- 8.2.6 दिलीप का सैन्य बल
- 8.2.7 दिलीप के गुण

8.3 सारांश

8.4 शब्दावली

8.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप –

- रघुवंश के आदि राजा मनु का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- राजा दिलीप के प्रभाव को जान सकेंगे।
- कालिदास के वर्णन वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे।
- प्राचीन राजाओं के गुणों से परिचित हो सकेंगे।
- अनेक सन्धियों और समासों को जान सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

पूर्व इकाई में आपने रघुवंश महाकाव्य के प्रारम्भिक दस श्लोकों का अध्ययन किया और यह जाना कि किसी भी कार्य के आरम्भ में प्रथमतः मंगलाचरण की परम्परा का निर्वाह करना चाहिये। हमें अपने ज्ञान और बल पर कभी अहंकार नहीं करना चाहिये। कालिदास ने काव्य रचना का महान् सामर्थ्य होने के बाद भी अपनी विनम्रता को द्योतित किया है। कालिदास महान् काव्य-प्रतिभा के कवि हैं, तथापि अपने वर्ण्यविषय की महत्ता को संकेतित करते हुये वे कहते हैं कि मैं मूर्ख हूँ और कवि के यश को प्राप्त करने का इच्छुक हूँ। अतः मैं उन्नत पुरुष के द्वारा प्राप्त करने योग्य फल की ओर लोभ से ऊपर हाथ उठाये हुए बौने व्यक्ति के समान उपहास का पात्र बनूँगा।

कालिदास अपने कृतित्व का श्रेय स्वयं न लेते हुये उसे अपने पूर्ववर्ती वाल्मीकि आदि कवियों को देते हैं और कहते हैं कि सूर्यवंश पर रामायण आदिकाव्य लिखकर वाल्मीकि आदि

कवियों ने मेरे लिये वाणी का द्वार पहले ही खोल दिया है। अतः मेरे लिये सूर्यवंश में प्रविष्ट होना तथा उसका वर्णन करना उसी प्रकार सरल हो गया है, जिस प्रकार वज्र से छेदे गये मणि में सूत्र सरलता से प्रविष्ट हो जाता है।

इस इकाई में आप रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग के 11 से 25 श्लोक तक का अध्ययन करेंगे। इन पन्द्रह श्लोकों में कालिदास ने वैवस्वत मनु तथा महाराज दिलीप का वर्णन किया है। दिलीप महान् तेजस्वी और प्रजावत्सल राजा थे। उन्होंने गुरु वसिष्ठ के आश्रम में रहकर कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा की थी तथा उसकी रक्षा के लिये सिंह के सम्मुख अपने को मांस के टुकड़े के समान समर्पित कर दिया था। कालिदास ने उनके वक्षस्थल की विशालता, उन्नत गात्रता तथा विशाल भुजाओं का वर्णन करते हुये उन्हें साक्षात् पराक्रम की संज्ञा दी है। दिलीप महान् शक्तिशाली थे। अपने आकार के समान उनकी प्रज्ञा थी। प्रज्ञा के अनुसार उनका आगम था। आगम के समान ही वे कार्यारम्भ करते थे तथा आरम्भ के समान ही फल प्राप्ति होती थी। वह एक साथ भयंकर और कान्त दोनों थे। कालिदास राजा में दोनों प्रकार के गुणों के पक्षधर हैं। शत्रुओं से सामना होने पर उन्हें भयंकर होना पड़ता है तथा प्रजा के प्रति उन्हें वात्सल्य की भावना भी रखनी होती है। रघुवंशी राजाओं की कर-व्यवस्था का उल्लेख करते हुये कालिदास ने कहा है कि वे राजा प्रजा के कल्याण के लिये ही उनसे कर लेते थे। जिस प्रकार सूर्य समुद्रादि से जल लेकर उसे हजार गुना करके बरसाता है। उसी प्रकार राजा दिलीप अपनी प्रजा से कर लेकर उसे सहस्र गुणित करके प्रजा के कल्याण में व्यय करते थे। कालिदास युद्ध के विरोधी थे। अतः अपने राजनायकों को उन्होंने शास्त्रों से ही कार्य करने वाला बताया है। उनके धनुष का प्रभाव मात्र ही उनकी विजय का कारण बनता था। राजा दिलीप के अनेक राजोचित गुणों का वर्णन भी आप यहाँ पढ़ेंगे।

इस प्रकार इस इकाई में आप कालिदास के द्वारा वर्णित राजा दिलीप के कुछ गुणों का अध्ययन कर सकेंगे। जिससे आप उन राजगुणों की सार्वकालिकता तथा सार्वभौमिकता का भी आकलन कर सकेंगे।

8.2 काव्यांश की व्याख्या

8.2.1 मनु का परिचय

वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्द सामिव।।11।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि कालिदास ने महाराज मनु का परिचय देते हुये उन्हें राजाओं में प्रथम तथा वेदों में ओंकार की तरह बताया है।

अन्वयः – मनीषिणां माननीयः वैवस्वतः नाम मनुः छन्दसां प्रणवः इव महीक्षिताम् आद्यः आसीत्।

शब्दार्थ – मनीषिणाम् = विद्वानों के, माननीयः = पूज्य, छन्दसाम् = वेदों के, प्रणवः इव = ओंकार के समान, महीक्षिताम् = पृथ्वी के राजाओं में, आद्यः = सर्वप्रथम, वैवस्वतः नाम = वैवस्वत नाम के सूर्य के पुत्र, मनुः = प्रथम मनु, आसीत् = थे।

अनुवाद – जिस प्रकार वेदों में सर्वप्रथम ओंकार होता है। उसी प्रकार राजाओं में सर्वप्रथम विद्वानों के पूजनीय सूर्य के पुत्र वैवस्वत नाम के मनु हुए।

सन्धि –

आसीन्महीक्षिताम् – आसीत् + महीक्षिताम् (अनुनासिक सन्धि)

प्रणवश्छन्दसामिव – प्रणवः + छन्दसामिव (श्चुत्व सन्धि)

समास –

मनीषिणाम् – मनसः इषिणः मनीषिणः तेषाम् मनीषिणाम् (तत्पुरुष समास)

महीक्षिताम् – महीं क्षियन्ति इति महीक्षितः तेषाम् महीक्षिताम् (उपपद समास)

विशेष – महाकवि कालिदास दस श्लोकों में रघुवंश के राजाओं का गुणानुवर्णन करने के अनन्तर इस श्लोक से उनकी वंश परम्परा का वर्णन प्रारम्भ करते हैं। महाराज मनु साक्षात् सूर्य के पुत्र थे। सूर्य का एक नाम विवस्वान् है। विवस्वान् का पुत्र होने के कारण मनु को वैवस्वत कहा गया। इनकी चर्चा अनेक पुराणों में भी हुई है। कालिदास ने उन्हें ओंकार के समान आदरणीय और सर्वव्यापक बताया है।

8.2.2 दिलीप का जन्म

तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव।।12।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने महाराज मनु के पुत्र दिलीप के जन्म का वर्णन किया है।

अन्वयः – शुद्धिमति तदन्वये शुद्धिमत्तरः दिलीप इति राजेन्दुः क्षीरनिधौ इन्दुः इव प्रसूतः।

शब्दार्थ – शुद्धिमति = शुद्धता से युक्त, तदन्वये = उस मनु के वंश में, शुद्धिमत्तरः = अत्यन्त शुद्ध चरित्र वाले, दिलीप इति = दिलीप नामक, राजेन्दुः = राजाओं में श्रेष्ठ, क्षीरनिधौ = क्षीरसागर में, इन्दुः इव = चन्द्रमा के समान, प्रसूतः = उत्पन्न हुआ।

अनुवाद – सूर्य के पुत्र उस मनु के अत्यन्त शुद्ध वंश में क्षीरसागर में चन्द्रमा के समान राजाओं में श्रेष्ठ परम पवित्र दिलीप नामक राजा हुआ।

सन्धि –

राजेन्दुरिन्दुः – राजेन्दुः + इन्दुः (विसर्ग सन्धि)

क्षीरनिधाविव – क्षीरनिधौ + इव (अयादि सन्धि)

समास –

तदन्वये – तस्य अन्वयः तदन्वयः, तस्मिन् तदन्वये (तत्पुरुष समास)

राजेन्दुः – राजा इन्दुः इव राजेन्दुः (मयूरव्यंसकादि समास)

क्षीरनिधौ – क्षीरस्य निधिः क्षीरनिधिः, तस्मिन् (तत्पुरुष समास)

विशेष – रघुवंश महाकाव्य में चर्चित राजाओं में महाराज दिलीप का स्थान सर्वोच्च है। उन्होंने प्रजा के पालन तथा धर्म की रक्षा के लिये सदैव कार्य किया। उनकी पत्नी का नाम सुदक्षिणा था तथा उनके रघु नामक अत्यन्त प्रतापी पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसके नाम पर इस महाकाव्य का नाम रघुवंश रखा गया है।

8.2.3 दिलीप का स्वरूप

व्यूढोरस्को वृषस्कन्धः शालप्रांशुर्महाभुजः।
आत्मकर्मक्षमं देहं क्षात्रो धर्म इवाश्रितः।।13।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि कालिदास ने मनु के वंश में जन्मे राजा दिलीप के स्वरूप का वर्णन किया है।

अन्वयः – व्यूढोरस्कः वृषस्कन्धः शालप्रांशुः महाभुजः (सः) आत्मकर्मक्षमं देहम् आश्रितः क्षात्रः धर्म इव (स्थितः)।

शब्दार्थ – व्यूढोरस्कः = विशाल वक्षस्थल वाले, वृषस्कन्धः = वृषभ के स्कन्ध के समान स्कन्ध वाले, शालप्रांशुः = शाल वृक्ष के समान उन्नत, महाभुजः = बड़ी भुजाओं वाले, आत्मकर्मक्षमम् = अपने कार्यों को करने में समर्थ, देहम् = शरीर को, आश्रितः = धारण किये हुए, क्षात्रः = क्षत्रियसम्बन्धी, धर्मः = पराक्रम के, इव = समान।

अनुवाद – महाराज दिलीप का वक्षस्थल अत्यधिक चौड़ा था। उनके स्कन्ध वृषभ के स्कन्ध के समान ऊँचे और मजबूत थे। वे शालवृक्ष के समान उन्नत थे तथा उनकी भुजायें अत्यन्त दीर्घ थीं। वे अपने कार्यों के सम्पादन में समर्थ शरीर को धारण करते थे। जिससे ऐसा प्रतीत होता था मानो राजा दिलीप मूर्तिमान् क्षत्रिय धर्म हैं।

सन्धि –

इवाश्रितः – इव + आश्रितः (दीर्घ सन्धि)

समास –

व्यूढोरस्कः	–	व्यूढम् उरः यस्य सः व्यूढोरस्कः (बहुव्रीहि समास)
वृषस्कन्धः	–	वृषस्य स्कन्ध इव स्कन्धः यस्य सः वृषस्कन्धः (बहुव्रीहि समास)
शालप्रांशुः	–	शाल इव प्रांशुः शालप्रांशुः (कर्मधारय समास)
महाभुजः	–	महान्तौ भुजौ यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
आत्मकर्मक्षमम्	–	आत्मनः कर्म इति आत्मकर्म, आत्मकर्मणि क्षमम्, आत्मकर्मक्षमम् (तत्पुरुष समास)

विशेष – शास्त्रों में किसी भी महापुरुष के स्कन्ध का वर्णन वृषभ के स्कन्ध की उपमा देकर किया जाता है। वृषभ अपने स्कन्ध पर समस्त भार को धारण कर लेता है। राजा दिलीप का स्कन्ध वृषभ के स्कन्ध के समान है। अतः वह समस्त प्रजा के भार को धारण करने में समर्थ हैं। इसी प्रकार उनकी ऊँचाई की तुलना शाल वृक्ष से की गई है। भुजाओं को जानुपर्यन्त लम्बमान् निरूपित किया गया है। यह शास्त्रीय स्वरूप उनकी वीरता तथा प्रजाजनों को धारण करने की क्षमता को द्योतित करता है।

सर्वातिरिक्तसारेण सर्वतेजोऽभिभाविना।
स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वीं क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना।।14।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने राजा दिलीप की सर्वव्यापकता का वर्णन किया है।

अन्वयः – सर्वातिरिक्तसारेण सर्वतेजोऽभिभाविना सर्वोन्नतेन आत्मना मेरुः इव उर्वीं क्रान्त्वा स्थितः।

शब्दार्थ – सर्वातिरिक्तसारेण = सभी प्राणियों से अधिक बल वाले, सर्वतेजोभिभाविना = सभी लोगों को अपने तेज से तिरस्कृत करने वाले, सर्वोन्नतेन = सबसे ऊँचे, आत्मना = अपने शरीर से, मेरुः इव = सुमेरु पर्वत के समान, ऊर्वीम् = पृथ्वी को, क्रान्त्वा = व्याप्तकर, स्थितः = विद्यमान है।

अनुवाद – जिस प्रकार सुमेरु पर्वत ने अपनी दृढ़ता, कान्ति तथा ऊँचाई से संसार के सभी दृढ़, कान्तियुक्त तथा ऊँचे पदार्थों को तिरस्कृत करके अपने विस्तार से सम्पूर्ण पृथ्वी को व्याप्त कर लिया है। उसी प्रकार राजा दिलीप ने अपने पराक्रम, तेज और विशाल व्यापक शरीर से सबको तिरस्कृत करते हुये समस्त पृथ्वी मण्डल को अपने अधीन कर लिया था।

सन्धि –

सर्वोन्नतेनोर्वीम् – सर्वोन्नतेन + ऊर्वीम् (गुण सन्धि)

मेरुरिव – मेरुः + इव (विसर्ग सन्धि)

इवात्मना – इव + आत्मना (दीर्घ सन्धि)

समास –

सर्वातिरिक्तसारेण – सर्वेभ्यः अतिरिक्तः सारः यस्य सः सर्वातिरिक्तसारः तेन सर्वातिरिक्तसारेण, (बहुव्रीहि समास)

सर्वतेजोभिभाविना – सर्वान् तेजसा अभिभवतीति इति सर्वतेजोऽभिभावी, तेन सर्वतेजोऽभिभाविना (तत्पुरुष समास)

सर्वोन्नतेन – सर्वेभ्यः उन्नतः सर्वोन्नतः तेन सर्वोन्नतेन (तत्पुरुष समास)

विशेष – यहाँ राजा दिलीप के पराक्रम और प्रभाव को सुमेरु पर्वत के समान बताया गया है। सुमेरु पर्वत अपने गुणों के कारण समस्त पदार्थों को तिरस्कृत करके समग्र पृथ्वी में अपने एकाधिपत्य को स्थापित किये हुये है। उसी प्रकार राजा दिलीप ने अपने गुणों के कारण अन्य समस्त राजाओं को तिरस्कृत करके समग्र पृथ्वी में अपना एकाधिपत्य या चक्रवर्तित्व स्थापित किया।

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भः आरम्भसदृशोदयः।।15।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि कालिदास ने महाराज दिलीप के आकार आदि का वर्णन किया है।

अन्वयः – (स दिलीपः) आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः आगमैः सदृशारम्भः आरम्भसदृशोदयः (आसीत्)।

शब्दार्थ – आकारसदृशप्रज्ञः = आकृति के अनुरूप बुद्धि वाले, प्रज्ञया = बुद्धि के समान, सदृशागम = शास्त्र को अभ्यास करने वाले, आगमैः = शास्त्रों के अनुसार से, सदृशारम्भः = आरम्भ करने वाले, आरम्भसदृशोदयः = आरम्भ के अनुसार फल को प्राप्त करने वाले।

अनुवाद – महाराज दिलीप जिस प्रकार विशालकाय और सुन्दर आकार वाले थे वैसी ही आकार के समान उनकी बुद्धि थी। जैसी तीक्ष्ण उनकी बुद्धि थी वैसे ही वे शास्त्राभ्यास करने वाले थे। वे जैसा शास्त्राभ्यास करते थे या शास्त्रों से सीखते थे वैसे ही शास्त्रानुकूल कार्य

सम्पन्न करते थे। वे जैसे शास्त्रानुकूल कार्य सम्पन्न करते थे उसी प्रकार की सफलता प्राप्त करते थे।

सन्धि –

सदृशागमः – सदृश + आगमः (दीर्घ सन्धि)

सदृशारम्भः – सदृश + आरम्भः (दीर्घ सन्धि)

सदृशोदयः – सदृश + उदयः (गुण सन्धि)

समास –

आकारसदृशप्रज्ञः – आकारेण सदृशी प्रज्ञा यस्य सः आकारसदृशप्रज्ञः (बहुव्रीहि समास)

सदृशागमः – सदृशः आगमः यस्य सः, सदृशागमः (बहुव्रीहि समास)

आरम्भसदृशोदयः – आरभ्यते इति आरम्भः, आरम्भेण सदृशः उदयः यस्य सः आरम्भसदृशोदयः (बहुव्रीहि समास)

विशेष – कालिदास ने इस पद्य में राजा दिलीप के आकार, बुद्धि, शास्त्राभ्यास, आरम्भ तथा फल प्राप्ति में एकरूपता दिखाई है।

8.2.4 दिलीप के गुण

भीमकान्तै र्नृपगुणैः स बभूवोपजीविनाम्।
अधृष्यश्चाभिगम्यश्च यादोरत्नैरिवार्णवः।।16।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने महाराज दिलीप के भयंकर और कोमल गुणों का समन्वय स्थापित किया है।

अन्वयः – भीमकान्तैः नृपगुणैः च स उपजीविनां यादोरत्नैः अर्णव इव अधृष्यः अभिगम्यः च बभूव।

शब्दार्थ – भीमकान्तैः = भयंकर और सुन्दर, नृपगुणैः = राजाओं के लिये अपेक्षित गुणों से, सः = वह राजा दिलीप, उपजीविनाम् = आश्रित लोगों के लिये, यादोरत्नैः = जलजन्तु और रत्नों से, अर्णवः इव = समुद्र के समान, अधृष्यः = अभिभव के अयोग्य, अभिगम्यश्च = आश्रयदाता, बभूव = हुए।

अनुवाद – राजा दिलीप तेज और प्रताप आदि भयंकर तथा दया-दाक्षिण्य आदि मनोहर दोनों प्रकार के राजगुणों को धारण करते थे। अतः राजा दिलीप आश्रित जनों के लिये उसी प्रकार अधृष्य आश्रयदाता थे जिस प्रकार मगरमच्छ आदि जलजन्तुओं और विभिन्न प्रकार के रत्नों के कारण समुद्र अधृष्य आश्रयस्थली बना रहता है अर्थात् मगरमच्छ आदि से डरकर लोग समुद्र से दूर भी भागते हैं तथा रत्नों को प्राप्त करने के लिये उसके पास भी आते हैं।

सन्धि –

भीमकान्तैर्नृपगुणै – भीमकान्तैः + नृपगुणैः (विसर्ग सन्धि)

बभूवोपजीविनाम् – बभूव + उपजीविनाम् (गुण सन्धि)

अधृष्यश्च – अधृष्यः + च (श्चुत्व सन्धि)

अभिगम्यश्च – अभिगम्यः + च (श्चुत्व सन्धि)

चाभिगम्यः – च + अभिगम्यः (दीर्घ सन्धि)

यादोरत्नैरिवार्णवः – यादोरत्नैः + इवार्णवः (विसर्ग सन्धि)

इवार्णवः – इव + अर्णवः (दीर्घ सन्धि)

समास–

भीमकान्तैः – भीमाश्च कान्ताश्च भीमकान्ताः, तैः भीमकान्तैः (द्वन्द्व समास)

नृपगुणैः – नृपाणाम् गुणाः तैः नृपगुणैः (तत्पुरुष समास)

उपजीविनाम् – उपजीवन्ति इति उपजीविनः तेषाम् उपजीविनाम् (उपपद समास)

यादोरत्नैः – यादांसि च रत्नानि च यादोरत्नानि तैः यादोरत्नैः (द्वन्द्व समास)

विशेष – महाकवि कालिदास ने राजा दिलीप की कठोरता और कोमलता का समन्वय करते हुये उन्हें कभी तिरस्कृत न किये जाने योग्य निरूपित किया है।

रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वर्त्मनः परम्।
न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः।।17।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में कालिदास ने दिलीप के राज्य में प्रजाजनों द्वारा मनु के द्वारा निर्धारित नियमों के उल्लंघन न करने का वर्णन किया है।

अन्वयः – नियन्तुः तस्य नेमिवृत्तयः प्रजाः आमनोः क्षुण्णात् वर्त्मनः रेखामात्रमपि न व्यतीयुः।

शब्दार्थ – नियन्तुः = नियामक, तस्य = उस राजा दिलीप के, नेमिवृत्तयः = चक्र के पहिये के समान व्यापार वाले, प्रजाः = प्रजाजनों ने, आमनोः = मनु से लेकर, क्षुण्णाद् = अभ्यस्त किए गये, वर्त्मनः = आचार पर अर्थात् नियम पर अथवा मार्ग पर, परम् = अधिक, रेखामात्रम् = थोड़ा भी, न = नहीं, व्यतीयुः = उल्लंघन किये।

अनुवाद – जिस प्रकार चतुर सारथी के द्वारा चलाये गये रथ के पहिये मार्ग से रंच मात्र भी इधर-उधर नहीं हो पाते। उसी प्रकार सुयोग्य शासक राजा दिलीप के द्वारा शासित प्रजा किंचित् मात्र भी मनु के द्वारा निर्धारित नियमों का उल्लंघन नहीं करती थी।

सन्धि –

क्षुण्णादामनोः – क्षुणात् + आमनोः (जश्त्व सन्धि)

आमनोर्वर्त्मनः – आमनोः + वर्त्मनः (विसर्ग सन्धि)

प्रजास्तस्य – प्रजाः + तस्य (विसर्ग सन्धि)

नियन्तुर्नेमिवृत्तयः – नियन्तुः + नेमिवृत्तयः (विसर्ग सन्धि)

समास–

आमनोः – मनुम् आरभ्य (तत्पुरुष समास)

नेमिवृत्तयः – नेमीनां वृत्तिः इव वृत्तिः यासां ताः नेमिवृत्तयः (कर्मधारयगर्भ बहुव्रीहि समास)

विशेष – कालिदास ने दिलीप की शासन की योग्यता का वर्णन करते हुये उन्हें चतुर सारथी के रूप में निरूपित किया है। चतुर सारथी द्वारा संचालित रथ के पहिये मार्ग से

किंचित् मात्र भी इधर-उधर नहीं होते। इसी प्रकार मनु के द्वारा राजा और प्रजा के लिये निर्धारित नियमों का उल्लंघन दिलीप के राज्य में प्रजाजनों द्वारा नहीं किया जाता था।

8.2.5 दिलीप की कर-व्यवस्था

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्त्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।18।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में कालिदास ने राजा दिलीप की कर-व्यवस्था का उल्लेख किया है।

अन्वयः – स प्रजानाम् एव भूत्यर्थं ताभ्यः बलिम् अग्रहीत्, हि रविः सहस्त्रगुणम् उत्स्रष्टुं रसम् आदत्ते।

शब्दार्थ – सः = वह राजा दिलीप, प्रजानाम् = प्रजाओं के, भूत्यर्थम् = कल्याण के लिए, एव = ही, ताभ्यः = उन प्रजाओं से, बलिम् = कर को, अग्रहीत् = लेता था, हि = जैसे, रविः = सूर्य, सहस्त्रगुणम् = हजार गुना, उत्स्रष्टुम् = देने के लिए, रसम् = जल को, आदत्ते = लेता है।

अनुवाद – वह राजा दिलीप प्रजाओं के कल्याण के लिए ही उनसे कर लेता था, जैसे सूर्य हजार गुना अधिक देने के लिए ही समुद्र आदि से जल को ग्रहण करता है।

सन्धि –

भूत्यर्थम् – भूति + अर्थम् (यण् सन्धि)

समास–

भूत्यर्थम् – भूत्यै इदं भूत्यर्थम् (तत्पुरुष समास)

सहस्त्रगुणम् – सहस्त्रम् गुणाः यस्मिन् कर्मणि, तत् सहस्त्रगुणम् (बहुव्रीहि समास)

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने राजा दिलीप द्वारा निर्धारित कर व्यवस्था का उल्लेख किया है। उनका यह उल्लेख प्राचीन भारतीय राजाओं द्वारा कर निर्धारण के नियमों का भी संकेत करता है। कौटिल्य ने कहा है कि राजा को प्रजा के कल्याण के लिये कर लेना चाहिये। कालिदास सूर्य से दिलीप की तुलना करते हुये करग्रहण की बात करते हैं। जिस प्रकार सूर्य समुद्र आदि से जल लेकर उसे हजारों गुना अधिक करके वृष्टि करता है। उसी प्रकार दिलीप प्रजा द्वारा कर लेकर उससे अधिक उनके कल्याण के कार्यों में व्यय करता था।

8.2.6 दिलीप का सैन्य बल

सेना परिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम्।
शास्त्रेष्व कुण्ठिता बुद्धिर्मौर्वी धनुषि चातता।।19।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में कालिदास ने महाराज दिलीप के प्रभाव का वर्णन किया है।

अन्वयः – तस्य सेना परिच्छदः (बभूव)। अर्थसाधनं द्वयम् एव (आसीत्)। शास्त्रेषु अकुण्ठिता बुद्धिः, धनुषि आतता मौर्वी च।

शब्दार्थ – तस्य = उस राजा दिलीप की, सेना = सेना, परिच्छदः = छत्रचामर आदि उपकरण के समान शोभा मात्र, बभूव = थी, अर्थसाधनम् = प्रयोजन के साधक, द्वयमेव =

दो ही थे, शास्त्रेषु = शास्त्र आदि में, अकुण्ठिता = अव्याहत, बुद्धि = मति, धनुषि = धनुष में, आतता = आरोपित, मौर्वी = प्रत्यंचा।

अनुवाद– उस राजा दिलीप की सेना तो छत्र चामर आदि के समान शोभा को बढ़ाने वाली मात्र थी उसके प्रयोजन तो दो से ही सिद्ध हो जाते थे – एक तो सम्पूर्ण शास्त्रों में अप्रतिहत बुद्धि और दूसरी धनुष पर चढ़ी हुई प्रत्यंचा।

सन्धि –

परिच्छदस्तस्य – परिच्छदः + तस्य (विसर्ग सन्धि)

शास्त्रेष्वकुण्ठिता – शास्त्रेषु + अकुण्ठिता (यण् सन्धि)

चातता – च + आतता (दीर्घ सन्धि)

समास –

अर्थसाधनम् – अर्थस्य साधनम् अर्थसाधनम् (तत्पुरुष समास)

अकुण्ठिता – न कुण्ठिता अकुण्ठिता (नञ् तत्पुरुष समास)

विशेष – प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने राजा दिलीप के प्रभाव का वर्णन किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि राजा दिलीप का सैन्य संग्रह अतीव विशाल था। अनेक दुर्धर्श वीर उनकी सेना में थे किन्तु वे बार-बार सेना का प्रयोग करके किसी पर आक्रमण नहीं करते थे। उनकी प्रत्यंचा तथा शास्त्रों के अध्ययन से प्राप्त बुद्धि का इतना प्रभाव था कि समस्त कार्य उन्हीं के माध्यम से सिद्ध हो जाते थे। उनके धनुष के प्रभाव को सुनकर शत्रु स्वयं भयभीत हो जाते थे तथा शास्त्रज्ञान से प्राप्त उनकी राजनीति के सामने भी शत्रु स्वयं नतमस्तक रहते थे। अतः सेना के प्रयोग का अवसर ही नहीं होता था। यह सेना एक मात्र उनके लिये शोभा का साधन थी।

तस्य संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च।
फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्कारा प्राक्तना इव।।20।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने महाराज दिलीप के राजनीतिक चातुर्य का वर्णन किया है।

अन्वयः – संवृतमन्त्रस्य गूढाकारेङ्गितस्य च तस्य प्रारम्भाः प्राक्तनाः संस्काराः इव फलानुमेयाः (आसन्)।

शब्दार्थ – संवृतमन्त्रस्य = मन्त्रणा को गुप्त रखने वाले, गूढाकारेङ्गितस्य = अप्रकाशित चेष्टाओं और आकार वाले, तस्य = उस राजा दिलीप के, प्रारम्भाः = कार्य, प्राक्तनाः = पूर्वजन्म के, संस्काराः = संस्कार के समान, इव = यथा, फलेन = कार्यों से, अनुमेयाः = जानने योग्य।

अनुवाद – राजा दिलीप अपनी सभी प्रकार की मन्त्रणाओं को गुप्त रखते थे तथा अपने बाहर और भीतर के समस्त सुख और दुःख के चिह्नों को अपने आकार तथा संकेतों से प्रकट नहीं करते थे। जिस प्रकार पूर्वजन्म के संस्कार अपने फलों के द्वारा जाने जाते हैं। उसी प्रकार दिलीप के समस्त कार्यों का परिज्ञान कार्य सम्पन्न हो जाने तथा उनका परिणाम प्राप्त हो जाने के बाद ही होता था।

सन्धि –

गूढाकारेङ्गितस्य – गूढाकार + इङ्गितस्य (गुण सन्धि)

समास–

संवृतमन्त्रस्य – संवृतः मन्त्रः यस्य सः संवृतमन्त्रः तस्य संवृतमन्त्रस्य। (बहुव्रीहि समास)

गूढाकारेङ्गितस्य – आकारः च इङ्गितं च आकारेङ्गिते, गूढे आकारेङ्गिते यस्य सः गूढाकारेङ्गितः तस्य गूढाकारेङ्गितस्य (बहुव्रीहि समास)

फलानुमेयाः – फलेन अनुमेयाः फलानुमेयाः (तृतीया तत्पुरुष समास)

विशेष – कालिदास ने दिलीप की राजनीति और कूटनीति का संकेत करते हुये उन्हें ''संवृतमन्त्र'' कहा है। संवृतमन्त्र से उनका अभिप्राय गुप्त विचारों से है। राजा को अपनी मन्त्रणा को सदैव गुप्त रखना चाहिये। उन्हें कार्य सम्पन्न होने के बाद ही ज्ञात होना चाहिये। कालिदास दिलीप की संवृतमन्त्रता की पूर्वजन्मों के संस्कार से उपमा देते हैं। पूर्वजन्म के संस्कार अपने-अपने अवसर पर फलित होते हैं तथा फल के द्वारा उनका अनुमान किया जाता है। इसी प्रकार दिलीप के समस्त कार्य उनके आकार और संकेत से अनुमेय न होकर फल से अनुमेय थे।

8.2.7 दिलीप के गुण

जुगोपात्मानमत्रस्तो भेजे धर्ममनातुरः।
अगृध्नुराददे सोऽर्थमसक्तः सुखमन्वभूत्।।21।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि कालिदास ने आत्मरक्षा आदि के विषय में दिलीप के गुणों का वर्णन किया है।

अन्वयः – सः, अत्रस्तः, 'सन्' आत्मानं, जुगोप, अनातुरः, 'सन्' धर्मं, भेजे, अगृध्नुः, 'सन्' अर्थम्, आददे, असक्तः, 'सन्' सुखम्, अन्वभूत्।

शब्दार्थ – सः = राजा दिलीप, अत्रस्तः = निडर होकर, आत्मानम् = अपनी, जुगोप = रक्षा किया, अनातुरः = निरोग होकर, धर्मम् = धर्म की, भेजे = सेवा किया, अगृध्नुः = लोभ रहित, अर्थम् = धन, आददे = संग्रह किया, असक्तः = आसक्ति रहित होकर, सुखम् = सुख का, अन्वभूत् = भोग किया।

अनुवाद – उस राजा दिलीप ने निडर होकर अपनी आत्मरक्षा की। निरोग रहकर धर्म का सेवन किया। उसने लोभ रहित होकर धन का संग्रह किया और आसक्ति रहित होकर सांसारिक सुखों का भोग किया।

सन्धि –

जुगोपात्मानम् – जुगोप + आत्मानम् (दीर्घ सन्धि)।

अगृध्नुराददे – अगृध्नुः + आददे (विसर्ग सन्धि)।

अन्वभूत् – अनु + अभूत् (यण् सन्धि)

समास –

अत्रस्तः – न त्रस्तः, अत्रस्तः (नञ् तत्पुरुष समास)।

अनातुरः – न आतुरः, अनातुरः (नञ् तत्पुरुष समास)।

अगध्नुः – न गृध्नुः, अगृध्नुः (नञ् तत्पुरुष समास)।

ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव।।22।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में भी कालिदास ने महाराज दिलीप के राजोचित गुणों का वर्णन किया है।

अन्वयः – ज्ञाने, मौनं, शक्तौ, क्षमा, त्यागे, श्लाघाविपर्ययः 'इत्थं' तस्य, गुणाः गुणानुबन्धित्वात्, सप्रसवाः, इव, 'अभूवन्'।

शब्दार्थ – ज्ञाने = दूसरों की बात को जानकर भी, मौनम् = मौन रहना, शक्तौ = शक्ति होने पर भी, क्षमा = क्षमा करना, त्यागे = दान देकर भी, श्लाघाविपर्ययः = आत्म प्रशंसा ना करना, तस्य = राजा दिलीप के, गुणाः = गुण, गुणानुबन्धित्वात् = विरुद्ध गुणों के सहचारी होकर भी, सप्रसवाः = सहोदरों के, इव = तरह थे।

अनुवाद – राजा दिलीप दूसरों की बात जानकर के भी चुप रहते थे। उसका अपप्रचार नहीं करते थे। उनमें शत्रु से बदला लेने का सामर्थ्य था तथापि वे उन शत्रुओं को क्षमा करते थे। दान देकर भी आत्मप्रशंसा नहीं करते थे। इस प्रकार राजा दिलीप के ज्ञान, शक्ति और त्याग आदि गुण मौन, क्षमा तथा आत्मप्रशंसा आदि विरुद्ध गुणों से युक्त होकर सगे भाई की तरह प्रतीत होते थे।

समास –

श्लाघाविपर्ययः – श्लाघायाः विपर्ययः (षष्ठी तत्पुरुष समास)।

गुणानुबन्धित्वात् – अनुबध्नन्ति इति अनुबन्धिनः, अनुबन्धिनां भावः अनुबन्धित्वम्, गुणः अनुबन्धित्वम्, गुणानुबन्धित्वम्, तस्मात् (तत्पुरुष समास)।

सप्रसवाः – सह प्रसवः येषाम् ते (बहुव्रीहि समास)।

विशेष – शास्त्रों में ज्ञान का गुण मौन, शक्ति का गुण क्षमा तथा दान का गुण आत्मप्रशंसा का अभाव कहा गया है। राजा दिलीप में ज्ञान के साथ मौन, शक्ति के साथ क्षमा तथा दान के साथ आत्मप्रशंसा का अभावरूप गुण विद्यमान थे। ज्ञान और मौन, शक्ति और क्षमा तथा दान और आत्मप्रशंसा का अभाव परस्पर विरुद्ध धर्म हैं किन्तु राजा दिलीप में ये दोनों परस्पर विरुद्ध गुण सगे भाइयों की तरह बिना किसी विरोध के विद्यमान थे।

अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्यानां पारदृश्वनः।
तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्धत्वं जरसा विना।।23।।

प्रसंग – इस श्लोक में भी कवि कालिदास ने राजा दिलीप के गुणों का वर्णन किया है।

अन्वयः – विषयैः अनाकृष्टस्य, विद्यानां, पारदृश्वनः, धर्मरतेः, तस्य, जरसा विना, वृद्धत्वम्, आसीत्।

शब्दार्थ – विषयैः = सांसारिक भोगों से, अनाकृष्टस्य = दूर रहने वाले, विद्यानाम् = वेद-वेदांग आदि विद्याओं का, पारदृश्वनः = तत्त्ववेत्ता, धर्मरतेः = धर्मानुरागी, तस्य = उस दिलीप की, जरसा विना = वृद्धावस्था के बिना, वृद्धत्वम् = बुढ़ापा, आसीत् = था।

अनुवाद – राजा दिलीप सांसारिक भोगों से सर्वथा दूर रहते थे। वेद वेदांग आदि विद्याओं के तत्त्ववेत्ता थे। दिलीप धर्म में अत्यन्त अनुराग रखते थे। इस प्रकार वह राजा दिलीप वृद्धावस्था के बिना ही अपने गुणों के कारण वृद्ध जान पड़ते थे अर्थात् अपने ज्ञान आदि गुणों के कारण उनका सम्मान वृद्धों के समान था।

सन्धि –

विषयैर्विद्यानाम् – विषयैः + विद्यानाम् (विसर्ग सन्धि)

धर्मरतेरासीद् – धर्मरतेः + आसीत् (विसर्ग सन्धि)

समास –

अनाकृष्टस्य – न आकृष्टः, अनाकृष्टः, तस्य (नञ् तत्पुरुष समास)

पारदृश्वनः – पारं दृष्ट्वान् इति पारदृष्वा, तस्य (तत्पुरुष समास)

धर्मरतेः – धर्मे रतिः यस्य सः, तस्य (बहुव्रीहि समास)

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः।।24।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि कालिदास ने राजा दिलीप के प्रजापालन आदि गुणों का वर्णन किया है।

अन्वयः – प्रजानां विनयाधानात् रक्षणात्, भरणात्, अपि, सः पिता 'अभूत्' तासां पितरः 'तु' केवलं जन्महेतवः ''अभूवन्''।

शब्दार्थ – प्रजानाम् = प्रजाजनों में, विनयाधानात् = शिक्षा द्वारा विनम्रता, सदाचार आदि गुणों का आधान करने के कारण, रक्षणात् = रक्षा करने के कारण, भरणात् = भरण-पोषण करने के कारण, अपि = भी, सः = राजा दिलीप, तासाम् = उन प्रजाजनों के, पितरः = पिता, केवलम् = केवल, जन्महेतवः = जन्म देने के कारण मात्र।

अनुवाद – राजा दिलीप अपने प्रजाजनों में शिक्षा द्वारा विनम्रता तथा सदाचार आदि गुणों का आधान करते थे। वे उन प्रजाजनों की रक्षा करते थे तथा भोजन आदि देकर उनका भरण-पोषण भी करते थे। इस प्रकार राजा दिलीप ही उन प्रजाजनों के पिता थे, उनके पिता केवल जन्म के हेतु मात्र थे। जन्म देने के कारण ही उन्हें पिता कहा जाता था।

सन्धि –

पितरस्तासाम् – पितरः + तासाम् (विसर्ग सन्धि)

समास –

प्रजानाम् – प्रकर्षेण जायन्ते इति प्रजाः, तासाम् (तत्पुरुष समास)

विनयाधानात् – विनयस्य आधानम्, विनयाधानम्, तस्मात् (तत्पुरुष समास)

जन्महेतवः – जन्मनः हेतवः (तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

स्थित्यै दण्डयतो दण्ड्यान्परिणेतुः प्रसूतये।
अप्यर्थकामौ तस्यास्तां धर्म एव मनीषिणः।।25।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में भी महाकवि कालिदास ने राजा दिलीप के दण्ड आदि व्यवस्था का वर्णन किया है।

अन्वयः – दण्ड्यान्, एव, स्थित्यै, दण्डयतः, प्रसूतये, परिणेतुः, मनीषिणः, तस्य, अर्थकामौ, अपि, धर्मः, एव, आस्ताम्।

शब्दार्थ – दण्ड्यान् = दण्ड देने योग्य, स्थित्यै = लोकमर्यादा की रक्षा के लिये, दण्डयतः = दण्ड देने वाले, प्रसूतये = सन्तान प्राप्ति के लिये, परिणेतुः = विवाह करने वाले, मनीषिणः = विद्वान्, तस्य = उस राजा दिलीप के, अर्थकामौ = अर्थ और काम, अपि = भी, धर्मः = धर्म, एव = ही, आस्ताम् = थे।

अनुवाद – राजा दिलीप अपराधियों को लोकमर्यादा की रक्षा के लिये अपराध के अनुरूप ही दण्ड देते थे। सन्तान प्राप्ति के लिये ही विवाह करते थे। इस प्रकार उस विद्वान् राजा दिलीप के अर्थ और काम पुरुषार्थ भी धर्म ही थे।

सन्धि –

अप्यर्थकामौ – अपि + अर्थकामौ (यण् सन्धि)

तस्यास्ताम् – तस्याः + ताम् (विसर्ग सन्धि)

समास –

अर्थकामौ – अर्थश्च कामश्च (द्वन्द्व समास)

बोध प्रश्न–

1. सूर्य के पुत्र कौन थे ?
2. दिलीप के पुत्र का क्या नाम था ?
3. दिलीप किस वंश में उत्पन्न हुये थे ?
4. 'सहस्त्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः' सूक्ति वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है ?
5. कालिदास ने 'संवृतमन्त्र' विशेषण का प्रयोग किसके लिये किया है ?

अभ्यास प्रश्न –

1. 'सदसद्व्यक्तिहेतवः' से आप क्या समझते हैं ?
2. दिलीप के स्वरूप का वर्णन कीजिये ।
3. दिलीप की प्रज्ञा, आगम, आरम्भ और उदय कैसे थे ?
4. दिलीप अपने उपजीवियों के लिये किस प्रकार अधृष्य थे ?
5. दिलीप के राज्य में प्रजा कैसी थी ?
6. दिलीप की कर-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये।
7. दिलीप के कार्यों का अनुमान कैसे किया जाता था ?
8. 'प्रजानां विनयाधान.....' इत्यादि श्लोक की व्याख्या कीजिये ।

8.3 सारांश

इस इकाई के पन्द्रह श्लोकों में आपने महाराज दिलीप की राजव्यवस्था के बारे में अध्ययन किया। कालिदास के इस वर्णन से प्राचीन राजव्यवस्था पर भी प्रकाश डाला जा सकता है। उन्होंने सर्वप्रथम महाराज मनु का उल्लेख किया है। जिस प्रकार वेदों में सर्वप्रथम ओंकार होता है उसी प्रकार राजाओं में सर्वप्रथम विद्वानों के पूजनीय सूर्य के पुत्र वैवस्वत नाम के मनु हुए। सूर्य के पुत्र उस मनु के अत्यन्त शुद्ध वंश में, क्षीरसागर में चन्द्रमा के समान राजाओं में श्रेष्ठ परम पवित्र दिलीप नामक राजा हुआ। महाराज दिलीप का वक्षस्थल अत्यधिक चौड़ा था। उनके स्कन्ध वृषभ के स्कन्ध के समान ऊँचे और मजबूत थे। वे शालवृक्ष के समान उन्नत थे तथा उनकी भुजायें अत्यन्त दीर्घ थीं। वे अपने कार्यों के सम्पादन में समर्थ शरीर को धारण करते थे। जिससे ऐसा प्रतीत होता था मानो राजा दिलीप मूर्तिमान् क्षत्रियधर्म हैं। जिस प्रकार सुमेरु पर्वत ने अपनी दृढ़ता, कान्ति तथा ऊँचाई से संसार के सभी दृढ़, कान्तियुक्त तथा ऊँचे पदार्थों को तिरस्कृत करके अपने विस्तार से सम्पूर्ण पृथ्वी को व्याप्त कर लिया है उसी प्रकार राजा दिलीप ने अपने पराक्रम, तेज और विशाल व्यापक शरीर से सबको तिरस्कृत करते हुये समस्त पृथ्वीमण्डल को अपने अधीन कर लिया था। महाराज दिलीप जिस प्रकार विशालकाय और सुन्दर आकार वाले थे वैसी ही आकार के समान उनकी बुद्धि थी। जैसी तीक्ष्ण उनकी बुद्धि थी वैसे ही वे शास्त्राभ्यास करने वाले थे। वे जैसा शास्त्राभ्यास करते थे या शास्त्रों से सीखते थे वैसे ही शास्त्रानुकूल कार्य सम्पन्न करते थे। वे जैसे शास्त्रानुकूल कार्य सम्पन्न करते थे उसी प्रकार की सफलता प्राप्त करते थे।

कालिदास ने दिलीप के गुणों का उल्लेख करते हुये कहा है कि दिलीप तेज और प्रताप आदि भयंकर तथा दया, दाक्षिण्य आदि मनोहर, दोनों प्रकार के राजगुणों को धारण करते थे। अतः राजा दिलीप आश्रित जनों के लिये उसी प्रकार अधृष्य आश्रयदाता थे जिस प्रकार मगरमच्छ आदि जलजन्तुओं और विभिन्न प्रकार के रत्नों के कारण समुद्र अधृष्य आश्रयस्थली बना रहता है अर्थात् मगरमच्छ आदि से डर कर लोग समुद्र से दूर भी भागते हैं तथा रत्नों को प्राप्त करने के लिये उसके पास भी आते हैं। जिस प्रकार चतुर सारथी के द्वारा चलाये गये रथ के पहिये मार्ग से रंच मात्र भी इधर-उधर नहीं हो पाते। उसी प्रकार सुयोग्य शासक राजा दिलीप के द्वारा शासित प्रजा किंचित् मात्र भी मनु के द्वारा निर्धारित नियमों का उल्लंघन नहीं करती थी।

कालिदास ने राजा दिलीप की कर-व्यवस्था का उल्लेख करते हुये कहा है कि दिलीप प्रजाओं के कल्याण के लिए ही उनसे कर लेता था, जैसे सूर्य हजार गुना अधिक देने के लिए ही समुद्र आदि से जल को ग्रहण करता है। राजा दिलीप की सेना तो छत्र चामर आदि के समान शोभा को बढ़ाने वाली मात्र थी उसके प्रयोजन तो दो से ही सिद्ध हो जाते थे – एक तो सम्पूर्ण शास्त्रों में अप्रतिहत बुद्धि और दूसरी धनुष पर चढ़ी हुई प्रत्यंचा। राजा दिलीप अपनी सभी प्रकार की मन्त्रणाओं को गुप्त रखते थे तथा अपने बाहर और भीतर के समस्त सुख और दुःख के चिह्नों को अपने आकार तथा संकेतों से प्रकट नहीं करते थे। जिस प्रकार पूर्वजन्म के संस्कार अपने फलों के द्वारा जाने जाते हैं। उसी प्रकार दिलीप के समस्त कार्यों का परिज्ञान कार्य सम्पन्न हो जाने तथा उनका परिणाम प्राप्त हो जाने के बाद ही होता था। राजा दिलीप मौन क्षमा आदि अनेक गुणों से युक्त थे।

इस प्रकार इस इकाई में आपने दिलीप और उनकी राजव्यवस्था से सम्बन्धित पन्द्रह श्लोकों को पढ़ा तथा यह जाना कि प्राचीन भारतीय राजव्यवस्था अत्यन्त दृढ़ थी।

8.4 शब्दावली

छन्दसाम्	=	वेदों के
प्रणवः इव	=	ओंकार के समान
व्यूढोरस्कः	=	विशाल वक्षस्थल वाले
क्रान्त्वा	=	व्याप्तकर
ऊर्वीम्	=	पृथ्वी को
आगमैः	=	शास्त्रों के अनुसार से
सदृशागम	=	शास्त्र का अभ्यास करने वाले
भीमकान्तैः	=	भंयकर और सुन्दर
अभिगम्यश्च	=	आश्रयदाता
अधृष्यः	=	अभिभव के अयोग्य
आमनोः	=	मनु से लेकर
क्षुण्णाद्	=	अभ्यस्त किए गये
वर्त्मनः	=	आचार पर
व्यतीयुः	=	उल्लंघन किये
रसम्	=	जल को
आदत्ते	=	लेता है
अग्रहीत्	=	लेता था
आतता	=	आरोपित
मौर्वी	=	प्रत्यंचा
अकुण्ठिता	=	अव्याहत
फलेन	=	कार्यों से
अनुमेयाः	=	जानने योग्य
अगृध्नुः	=	लोभ रहित
सप्रसवाः	=	सहोदरों के
श्लाघाविपर्ययः	=	आत्म प्रशंसा ना करना
पारदृश्वनः	=	तत्त्ववेत्ता
विनयाधानात्	=	शिक्षा द्वारा विनम्रता

8.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) रघुवंशमहाकाव्यम्, डॉ. कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2011।

2) रघुवंशम्, प्रो. हरि दामोदर वेलणकर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्, नवदेहली, 2011।

3) कालिदास ग्रन्थावली, ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2012।

4) संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, कस्तूरबा नगर, सिगरा, वाराणसी, 2001।

5) वृत्तरत्नाकरः, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2011।

6) अमरकोश, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहर नगर, बंगलो रोड़, दिल्ली, 2011।

7) संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009।

8) संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास, (चतुर्थ खण्ड), प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 1967।

9) संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास (1-4 खण्ड), प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 2018।

8.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न –

1) मनु।

2) रघु।

3) रघुवंश।

4) रघुवंश महाकाव्य।

5) राजा दिलीप।

अभ्यास प्रश्न–

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY